AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (3), Issue (1), January-March 2026 ISSN: 3048-7951

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं में समायोजन क्षमता की एक अध्ययन

डा0 चन्द्र भूषण कुमार[1]

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18603635

Review:04/02/2026 Acceptance:04/02/2026 Publication:11/02/2026

सार (Abstract):

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के सभी छात्र-छात्राओं में प्राप्त समायोजन क्षमता की प्रकृति का तथा उससे संबंधित तरह् के शैक्षिक, सामाजिक एवं सांवेगिक कारकों के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए जाता है। बालक के किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों की तीव्रता के कारण विद्यार्थियों के समक्ष अनेक प्रकार की समायोजन संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। एक बालक के लिए विद्यालयी परिवेश में, विद्यार्थी सहपाठी समूह, उनके पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक अपेक्षाएँ उनके व्यवहार और मानसिक संतुलन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना और ज्ञात करना था कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक दृष्टिकोण उनमें होने वाली सांवेगिक समायोजन क्षमता को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। इस शोध अध्ययन में उपयुक्त नमूने का चयन कर मानकीकृत समायोजन मापन-पत्रों तथा उपलब्धि परीक्षणों के माध्यम से आँकड़े संकलित किए गए। प्राप्त शोध आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण कर के उन सह-संबंधों तथा अंतर की जाँच की गई।

शोध अध्ययन के दौरान निष्कर्षों से यह संकेत प्राप्त होता है कि शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन क्षमता के मध्य सार्थक संबंध है। सामान्य रूप बौद्धिक स्तर वाले विद्यार्थियों में समायोजन अपेक्षाकृत संतोषजनक पाया गया, जबकि अत्यधिक प्रतिभाशाली एवं निम्न बौद्धिक स्तर वाले विद्यार्थियों में समायोजन संबंधी कठिनाइयाँ अधिक दृष्टिगोचर हुईं। साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ कि सामाजिक परिवेश तथा विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सांवेगिक स्थिरता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

अतः यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विद्यालयों में परामर्श सेवाओं, जीवन-कौशल प्रशिक्षण तथा सकारात्मक शैक्षिक वातावरण के माध्यम से विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को सुदृढ़ किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षा-प्रशासकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे किशोर विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु प्रभावी रणनीतियाँ विकसित कर सकें।

मुख्य शब्द: समायोजन क्षमता, माध्यमिक स्तर, किशोरावस्था, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक समायोजन, सांवेगिक विकास, मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालयी वातावरण, बौद्धिक स्तर, विद्यार्थी विकास

[1] सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, ज्ञान प्रकाश कॉलेज ऑफ एजूकेशन चिरैला गयाजी (बिहार)

प्रस्तावना- शिक्षा वह प्रकाश है जो मानव के विकास का रास्ता दिखाता है। शिक्षा मानव के व्यक्तिव को निखारता है और देश के लिए मानव संसाधन बनाता है। किसी भी समाज की संस्कृति, सम्पन्नता एवं विकास वहाँ की शिक्षा पर ही निर्भर करती है। समाज में जितना अधिक से अधिक लोग शिक्षित होगें उस समाज का स्तर भी उतना ही अधिक शीर्ष पर होगा। सम्पूर्ण विश्व में भारत एक महत्वपूर्ण देश है जिसका अपना एक इतिहास रहा है। इसी धरा पर बहुत सारे नेतृत्वकर्ता पैदा हुए जिन्होनें अपनी विवेक तथा शिक्षा से सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित किया है। भारत में कई शहर ऐसा रहा है जिसका अपना इतिहास रहा है। जैसे बिहार राज्य के एक शहर गयाजी है जिसे मोक्ष एवं ज्ञान की धरती के नाम से भी जाना जाता है। यह वहीं धरा है जिसने सम्पूर्ण विश्व में प्रथम प्रजातांत्रीक प्रणाली स्थापित की थी, इसी राज्य को विश्व का सबसे प्रथम विश्व विद्यालय स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है। जहाँ पर विभिन्न देशों के शिक्षा पिपासु अपनी शिक्षा रूपी प्यास को बुझाने के लिए यहाॅं आया करते थें।

मनुष्य जीवन में शिक्षा के महत्व को भिन्न-भिन्न दृस्टिकोणों से वणर्न किया है। इस जगत की सबसे जटील प्राणी मानव है, इसकी प्रत्येक इकाई की विभिनन समस्याएं होती है जिनका समाधान खोजना अति आवश्यक हैं जीवन की प्रक्रिया में मनुष्य मन इतना जटिल है कि उसे समझाना साध्य नहीं असाध्य है। छात्रों का मस्तिष्क विकास प्राप्त कर चुका होता है, वे अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास करते रहते है। उचित साधन जुटाकर उनसे समायोजित होने के लिए निरंतर अग्रसर बने रहते है। वाध्य रूप से व्यक्ति के व्यवहारों के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है, परन्तु यह समझौता कि सामान्य दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ होना, भ्रमपूर्ण है। अपने परिवेश से समायोजन करके ही वह स्वस्थ मानव वन सकता है।

वर्तमान समय में देश के भविष्य को प्रतिविम्बित करने वाला दर्पण युवा ही है। भविष्य का भारत इन्ही युवा बालकों के हाथ होगा। देश की वागडोर अपने हाथों में लेने के अधिकारी ये छात्र अभी अपने भांवी जीवन की तैयारी बिना जाने ही कर रहे हैं जहाँ एक ओर उन विद्यार्थीयों के अभिभावक, अध्यापक और समाज इन्हें स्वस्थ विकास और प्रगति की दिशा में देखकर खुश है वही कभी-कभी इस छात्र-छात्राओं का विकास गलत दिशा में होते देख उनके द्वारा किये गये अवांछनीय कार्याे को देखकर अध्यापक और समाज किसी तरह की अनहोनी से डर जाते हैं। माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं से अच्छे सामाजिक समायोजन की उपेक्षा की जाती है। इसलिए हम अपने अध्ययन मे इसे रखा है। समायोजन कहने का मतलव यदि व्यक्ति समायोजित है तो इसका व्यक्तित्व पूर्ण विकसित होगा और वह अपना जीवन सुखि एवं शांतिपूर्वक व्यतीत करेगा।

मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की बौद्धिक उपलब्धि उनके समायोजन क्षमता के स्तर को प्रभावित करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि अत्यधिक प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं तथा निम्न बुद्धि के छात्र-छात्राओं अपने परिवेश से उचित ढ़ंग से समायोजन करने में असमर्थ होते हैं, जबकि सामान्य प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं में समायोजन क्षमता अच्छी होती है। किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन नहीं हो पाने के कारण से विभिन्न समय पर विभिन्न कारण सामने आये, इन सभी कारणों से मन मे यह विचार उत्पन्न हुआ की क्या वास्तव में माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक विचार छात्र-छात्राओं की सांवेगिक समायोजन क्षमता को प्रभावित करते हैं।

सामायोजन क्षमता से संबंधित पूर्व में किया गया अध्ययनः-

मेनन पी0 एन (1982) ने छात्रो में उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, बुद्धि, विंभेदकारी, अभिरूचि, सामायोजन क्षमता एवं आकांक्षा स्तर मे संबंध का निष्पादन किया। जिससे निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

1. उच्च एवं निम्न सम्पदान हेतू आठ विभेदकारी कारण अलग किये गये। उनमें से कुछ सामान्य मानसिक योग्यताए इसी सम्बन्धी गणितीय योग्यताए यांत्रिकी विचार भाषा प्रयोगए शैक्षिक उपलब्धि कारण थें।
2. यह सह-सम्बन्ध अध्ययन हेतूए केवल सात चर सार्थक रूप से छात्रों से सम्बन्धित है।

रेडडी आई0 वी0 आर (1983) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों का शैक्षिक समायोजन क्षमता तथा वैशयिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध देशांतरीय अध्ययन पी0 एच. डी0 स्तर पर किया है। जिसके निम्न निष्कर्ष पाये गये -

1. शैक्षणिक समायोजन क्षमता तथा वैशयिक उपलब्धि में सार्थक रूप से सम्बन्ध था।
2. मानसिक योग्यता एवं वैशयिक उपलब्धि संयत रूप से सम्बन्धित थे। शैक्षणिक समायोजन क्षमता, सामाजिक, आर्थिक स्तर से सम्बन्धित नहीं थी।

शैक्षिक महत्वः- समाज के शिक्षित लोग में यह धारण देखने को मिलती है कि उच्च बुद्धि एवं निम्न बुद्धि वाले विद्यार्थीयों में समायोजन क्षमता कम दिखाई पड़ती है। उच्च बुद्धि वर्ग के विद्यार्थीयों में अपनी प्रतिभा के कारण अपने सहयोगीयों एवं शिक्षक के साथ-साथ विद्यालय वातावरण के प्रति विरोधी व्यवहार अपना लेते हैं। यदि इन छात्र-छात्राओं की समस्याओं का समाधान समय रहते नहंी किया गया तो वे कुसमायोजित होकर उग्र रूप से समस्यात्मक बन जाते हैंए वही पर कम बुद्धि वाले विद्यार्थी अपनी बुद्धि में कमी के कारण अपने आपको हीन समझने लगते है और सही ढ़ंग से समायोजन नहीं कर पाते। अतः इन छात्र-छात्राओं की समस्याओं का समाधापन बहुत ही आवश्यक हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. डा. अग्रवाली जी के (1990द्ध सामाजिक सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी- आगरा बुक स्टोरए आगरा द्वितीय संस्करण

2. माथुर एम0 एस0 ;1991द्ध शिक्षा मनोविज्ञानए बिनोद पुस्तक आगरा।
3. भटनागर सुरेश (1998द्ध शिक्षा मनोविज्ञान
4. शर्मा आर0 ए0 ;1999द्ध. शैक्षिक अनुसंधान

शोध शीर्षक माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं में समायोजन क्षमता की एक अध्ययन

लेखकः डा0 चन्द्रभूषण कुमार (सहायक प्राध्यापक) 2026

इस शोध पत्र में प्रस्तुत सभी सामग्रीए जिसमें पाठए तालिकाएँ आरेखए चित्रए विश्लेषणए निष्कर्ष एंव अन्य बौद्विकता सम्मिलित हैए पूर्णतः मौलिक है तथा भारतीय कापॅीरायट अधिनियम 1957 के अंतर्गत सुरक्षित है। लेखक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस शोध पत्र का कोइ भी भाग किसी भी रूप या माध्यम- मुद्रित इलैक्ट्रानिकए डिजिटलए फोटोकापॅी या अन्य किसी भी स्वरूप में पुनः प्रकाशित ए पुनः उत्पादितए संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है। यह शोध पत्र किसी अन्य जर्नल में प्रकाशित नहीं है तथा वर्तमान में किसी अन्य प्रकाशन हेतु विचाराधीन नहीं है। सभी अधिकार सुरक्षित है।